अध्यक्षीय संदेश.....

किसानों की कुछ समस्याएं आम हैं, जैसे किसानों की जोत छोटी होना, उन्नत कृषिआदानों का समय से न मिलना, सिंचाई की कमी तथा मशीनों की सुविधाएं न होना। इन समस्याओं को किसान अपने स्तर पर सही प्लान कर सकता है। खेत की तैयारी के लिए ट्रैक्टर वगैरह की व्यवस्था किराये पर लेकर कर सकते हैं। सिंचाई की भी इतनी व्यवस्था किसान जरूर रखे कि बरसात कम होने की दशा में फसल को बचा सके। अच्छे गुणवत्ता पूर्ण बीजों का चुनाव करें, सही विश्वसनीय संस्था से ही बीज खरीदें। बीज सही नहीं होगा तो किसान की सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। इन अवस्थाओं से निपटने के लिए मेरा सुझाव होगा कि किसान आपस में मिल–जुलकर सहयोगात्मक रूप से खेती करना सीखें। एक दूसरे के सहयोग से अच्छा कार्य सुगमता से हो सकता है। अपने प्रयोग के लिए पैदावार से ज्यादा खेत होने पर, किसी खास फसल का, उत्पादन मिलकर करें, ताकि अच्छे खरीदार मिल सकें और माल का दाम भी अच्छा मिले। किसानों की ज्यादातर समस्याओं का समाधान आपसी सहयोग से हो सकता है।

सबसे जरूरी बात है आप की मिट्टी, पानी और खेती में खर्च कर पाने की क्षमता के अनुसार फसल का चुनाव। पानी कम है, तो अधिक पानी वाली फसल करने में परेशानी होगी, जबकि बारानी या मक्के, बाजरे की फसल उतने ही पानी में आसानी से हो सकती है। यह भी सोचना चाहिए कि फसल चक्र क्या हो, ताकि किसान ज्यादा फसलें लेकर फायदा उठा सके। साथ ही ध्यान रखना होगा कि प्राकृतिक आदनों की किसी क्षमता का अनावश्यक दोहन न हो, तभी आपकी पैदावार में सतत ताबर करार रहेगी। इन सब बातों के लिए किसान अपने नजदीकी कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्र या विशेषज्ञ से परामर्श लेकर प्लान कर सकते हैं। किसानों को चाहिए कि अपने ही गाँव के किसी किसान को लगातार इन संस्थाओं में संपर्क रखने के लिए प्रेरित करें, ताकि नई खोज से निकली प्रजातियाँ जल्दी से आप के गाँव पहुँच जाय और उनका लाभ मिले।

हमारे कृषि की बहुत समस्याएं हैं। उन सबसे लड़ते हुए भी हमारे किसानों ने कृषि को बहुत प्रगति दी हैं। जिस देश में 36 करोड़ जनसंख्या को खाने के अनाज की कमी होती थी, वह अब136 करोड़ लोगों के लिए भरपूर अनाज पैदा कर रहा है। उतना ही खेत है। पानी की किल्लत बढ़ी है, लेकिन वैज्ञानिक का सहयोग और किसान की मेहनत ने यह करिश्मा कर दिखाया। यहाँ तक कि घोर कोरोना काल में भी किसानों ने हिम्मत नहीं हारी और अपना काम समय से पूरा करते हुए हर चीज का ज्यादा उत्पादन दिया है। लेकिन देश अब एक अजीब समस्या से जूझ रहा है। समसत्य यह है कि कुछ चीजों का उत्पादन जरूरत से ज्यादा है और कुछ का कम। जैसे गेहूं, धान मक्का ज्यादा पैदा हो रहा है, तो दालें और तिलहन कम। जो ज्यादा है, उसके खरीदार नहीं मिलते, भाव कम मिलता है। जो कम है, उसके लिए आयात करने में पैसे खर्च होते हैं। इससे किसान और देश दोनों को नुकसान हो रहा है। किसान की आर्थिक स्थिति भी नहीं सुधर रही। किसान अपने गाँव में, क्षेत्र में आपस में विचार करें कि कौन सी फसल बोई जाय ताकि ज्यादा फायदा हो। संभव हो तो उसे अपने लेवल पर इकट्ठा करके, साफ सफाई करके, पास के कस्बे और शहर में उपभोक्ता तक सीधा पहुंचाएं ताकि आपको दाम अच्छा मिले और उपभोक्ता को सही खाद्य सस्ता पड़े। यह सब तभी संभव है, जब आपस में मिल जुलकर एक दूसरे को सहयोग करते हुए चलने का निर्णय करें।

आशा है यह अंक आप के लिए फायदेमंद होगा। आपकी खेती की मेहनत रंग लाए, आर्थिक स्थिति सुधरे, रहन–सहन ऊंचा हो और शिक्षा में उन्नति हो। आपस में मिलकर काम करने से सब संभव है। हमारी संस्था किसी भी इच्छुक कृषक समूह को किसी तरह की राय देने में तत्पर रहेगी। राजर्षि संदेश का समय से प्रकाशन करने के लिए प्रकाशन से जुड़ी टीम बधाई की पात्र है।

– अध्यक्ष
रॉयल विज्ञान सेवित सामाजिक सांस्कृतिक संस्था

सम्पादकीय.....

गत वर्ष में भारत सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में लागू किये गये तीन अधिनियम क्रमशः कृषक उत्पाद वाणिज्य एवं व्यापार अधिनियम 2020, किसान सशक्तिकरण एवं संरक्षण मूल्य आश्वासन अधिनियम एवं आवश्यक वस्तु संशोधन अधिनियम 2020 का मुख्य उद्देश्य किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य दिलाना व तुड़ाई उपरान्त उपज की हानि को कम करना है।

खेती की लागत कम करने व पर्यावरण संरक्षण हेतु शून्य बजट प्राकृतिक खेती का प्रचार प्रसार अत्यन्त आवश्यक है जिसमें फसल उत्पादन की लगात को न्यूनतम अथवा शून्य रखा जाना है। यह एक पारंपरिक भारतीय पद्धति है जिसमें जीवामृत, बीजामृत अच्छादन (मल्विंग), नमी (वापासा) आदि का समुचित प्रयोग करके किसानों की आय बढ़ायी जा रही है।

फलियों का भी मानव जीवन में महत्वपूर्ण योगदान है। यह मानव भोजन, पशु चारा व मिट्टी तथा पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सहायक होते हैं। फलियाँ मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा में वृद्धि करती हैं जिससे भौतिक व रासायनिक सुधार होता है।

उत्तर प्रदेश गन्ना शोध परिषद शाहजहांपुर द्वारा प्रथम बार गन्ना बैगास (खोई) के समुचित उपयोग पर शोध कार्य करके गन्ने का बीज संवर्धन हेतु कोकोपिट के स्थान पर बैगास का प्रयोग करने पर उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं। प्रस्तुत लेख में लेखकगण ने विस्तार से तकनीकी पर प्रकाश डाला है।

वर्तमान समय में मौसम की अनिश्चितता के साथ ही अतिवृष्टि व अनावृष्टि के कारण अपेक्षित उत्पादन नहीं प्राप्त हो पाता है। कई बार उच्च तापमान और सूखे की समस्या एक साथ खेतों में देखने को मिलती है। इन समस्याओं से निजात पाने के लिए ट्रेक्टर चालित मोल्डबोर्ड प्लाऊ का प्रयोग लाभप्रद है।

खेती के साथ ही पशुपालन को प्राथमिकता देते हुए गर्भावस्था के समय पशु प्रबन्धन आवश्यक है। गाभिन होने से ब्याने तक क समय को गर्भकाल कहते हैं। इस दौरान पशु के पोषण का ध्यान रखना आवश्यक होता है। उनके शरीर की विभिन्न अवस्थाओं में अलग–अलग भोज्य पदार्थों की आवश्यकता होती है। मत्स्य पालन सबसे तेजी से बढ़ने वाला खाद्य क्षेत्र है। मत्स्य पालन से आय व रोजगार के साथ ही उत्तम आहार प्राप्त होता है।

मशरूम खाने के प्रति लोगों की रुचि बढ़ रही है। इससे न केवल मशरूम की खेती का क्षेत्रफल बढे बल्कि रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि हो रही है। मशरूम का गुण मुख्य रूप से स्पान की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। स्पान प्रयोगशाला स्थापित करके उद्यमिता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

कोविड महामारी के समय फलों व सब्जियों का प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने में काफी महत्व है जिसका विस्तृत विवरण एक लेख के माध्यम से इसमें सम्मिलित किया गया है।

गांवों व शहरों में घर के आस–पास खाली जमीन में रसोई वाटिका बनाकर वर्ष भर ताजी सब्जियों का सेवन कर सकते हैं। रसोई वाटिका से रसायन मुक्त सब्जियां उगाकर दैनिक खर्च में कटौती की जा सकती है।

औरत की महत्ता आदिकाल से ही सर्वोपरि रही है। घर को संसार बनाने में औरत की पहली भूमिका है। एक कविता के माध्यम से कवि समाज में औरत के योगदान को दर्शाया है।

हम सभी आशा करते हैं कि राजर्षि संदेश का यह अंक पाठकों, विशेषकर किसानों के लिए काफी लाभदायक होगा।

– सम्पादकीय मण्डल